Dharmesh nanda . Department of Geography,
Government Degree College, Bagaha,
(West - Champaran)

Geography (Hons.) B.A. Part - 1

Topic Paper - 1

KOPPEN CLIMATE CLASSIFICATION

Dharmesh nanda
Assistant Professor (Geo
B.R.A Bihar Uni.
Muz. Bihar

Classification of Climate by ~~Koppen~~ Koppen
कोपेन का जलवायु वर्गीकरण

कोपेन का जलवायु वर्गीकरण मात्रात्मक (Quantitative) एवं आनुभविक (Empirical) है। कोपेन ने जलवायु का वर्गीकरण सर्वप्रथम 1900 में प्रस्तुत किया, जिसका आधार डी कैन्डाल (De Candole) का वनस्पति वर्गीकरण था। पुनः तापमान एवं वृष्टि के वार्षिक एवं मासिक औसत एवं उनके मौसमी वितरण के आधार पर उन्होंने 1918 में अपने वर्गीकरण का संशोधित रूप प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् कोपेन ने अपने वर्गीकरण को अनेक बार परिमार्जित एवं संशोधित करके 1931 ई. में उसका अन्तिम रूप प्रस्तुत किया।

कोपेन के मौलिक वर्गीकरण का अंतिम संशोधित रूप 1953 ई. में प्रकाशित हुआ, जो कोपेन गीगर पाल (Koppen - Geiger - pal) के वर्गीकरण के नाम से जाना जाता है।

कोपेन ने यह माना कि जलवायु के संदर्श युग प्राकृतिक वनस्पतियों के वितरण द्वारा सबसे अच्छी तरह व्यक्त होते हैं अतः उन्होंने एक ऐसा वर्गीकरण विकसित करने का प्रयास किया, जो जलवायु को वनस्पति के साथ घनिष्ठतापूर्वक जोड़ सके।

कोपेन ने जलवायु के उपर्युक्त समूहों को पुन: वर्षा के मौसमी वितरण के आधार पर उपसमूहों में विभाजित किया है। इसके लिए उपरोक्त अक्षरों के साथ अन्य अक्षरों का प्रयोग किया है जो निम्नलिखित हैं:

(i) S = अर्द्ध शुष्क (स्टेपी)
(ii) W = शुष्क (मरुस्थल) } इसका प्रयोग B समूह के साथ

(iii) T = ठंडी तुतप जलवायु
(iv) F = हिमाच्छादित जलवायु } इसका प्रयोग E प्रकार के साथ

चित्र : विश्व जलवायु वर्गीकरण (कोपेन)

कोपेन ने प्रथम जलवायु प्रदेशों को पुन: उपविभाजित किया, A प्रकार की जलवायु को उन्होंने तीन उपवर्गों AF, Am, Aw में बांटा

AF जलवायु विशेषताएं – यह विषुवतीय जलवायु का द्योतक है जो अमेजन बेसिन, जायरे बेसिन, द० पू० एशिया की विशेषताएं हैं। यहां सालोभर उच्च तापमान एवं भारी वर्षा इसकी विशेषताएं हैं।

कोपेन का जलवायु वर्गीकरण चार महत्वपूर्ण आधारों पर आधारित है - (i) वनस्पति (ii) तापमान (iii) वर्षा (iv) उच्चावच इसमें सबसे महत्वपूर्ण आधार उन्होंने वनस्पति को माना है कोपेन ने तापमान को प्रथम एवं द्वितीय स्तरीय आधार बनाया। वर्षा को मूल रूप से द्वितीय एवं तृतीय स्तरीय वर्गीकरण का आधार बनाया।

कोपेन ने मोटे तौर पर जलवायु को 5 प्रमुख वर्गों में विभाजित किया है। प्रत्येक वर्ग को अंग्रेजी के बड़े अक्षर (Capital Letter) द्वारा नामांकित किया गया है:

(i) आर्द्र उष्ण कटिबंधीय जलवायु (A): इस जलवायु में सर्वाधिक ठंडे महीने का औसत तापमान भी 18°C या उससे अधिक होता है।

(ii) शुष्क जलवायु (B) - इस जलवायु में वर्ष भर वाष्पीकरण (Evaporation) वर्षण (Precipitation) से अधिक होता है।

(iii) आर्द्र शीतोष्ण कटिबंधीय जलवायु (C) - सबसे गर्म महीने का औसत तापमान 10°C से अधिक एवं सबसे ठंडे महीने का औसत तापमान 0°C से अधिक परंतु 18°C से कम।

(iv) अल्पतापीय जलवायु (D) — सबसे गर्म महीने का औसत तापमान 10°C से अधिक एवं सबसे ठंडे महीने का औसत तापमान 0°C या उससे कम।

(v) ध्रुवीय जलवायु (E) — सबसे गर्म महीने का औसत तापमान 10°C से भी कम।